© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

माध्यमिक स्तर के विद्यालय त्याज्य बालकों के अभिभावक सम्बन्ध का उनके मानसिक योग्यता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

राकेश कुमार
शोधछात्र (शिक्षाशास्त्र)
नेहरू ग्राम भारती मानित विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

शोध आलेख सार – प्रस्तुत अध्ययन माध्यमिक स्तर के विद्यालय त्याज्य बालकों के अभिभावक सम्बन्ध का उनके मानसिक योग्यता पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना है। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सहसम्बन्धात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में इलाहाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षा ग्रहण कर शिक्षा त्याग करने वाले बालकों को जनसंख्या माना गया है। न्यादर्श के रूप में 150 बालकों का चयन उद्देश्यपरक विधि से किया गया है। डॉ0 नलिनी राव द्वारा सृजित ''माता–पिता बालक सम्बन्ध'' परीक्षण तथा मानसिक योग्यता को मापने के लिए बुद्धि को मापने के लिए एम. सी. जोशी द्वारा निर्मित मानसिक योग्यता परीक्षण का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण के प्रसरण (एनोवा) सांख्यिकी विधि तथा टी–परीक्षण का प्रयोग किया है। निष्कर्ष रूप में पाया गया कि उच्च, मध्यम एवं निम्न अभिभावक सम्बन्ध वाले बालकों की मानसिक योग्यता एक–दूसरे से भिन्न है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि बालकों के अभिभावक सम्बन्ध का विद्यालय त्याज्य बालकों के मानसिक योग्यता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

की–वर्ड – माध्यमिक स्तर, त्याज्य, बालक, अभिभावक सम्बन्ध, मानसिक योग्यता।

प्रस्तावना–

शिक्षा मानव जीवन के विकास की धुरी है। शिक्षा से मनुष्य अपने को सामर्थ्यवान बनाता है, अपनी ऊर्जा और शक्तियों का सही दिशा में प्रयोग करता है। जन्म के समय बालक पूर्णरूप से असहाय होता है। लेकिन जैसे–जैसे बड़ा होता है और परिवार तथा समाज के अधिकाधिक सम्पर्क में आता है, उसका शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, संवेगात्मक एवं सामाजिक विकास होता जाता है। वस्तुतः विकास के विभिन्न आयाम उसे एक नवीन व अविरल व्यक्तित्व प्रदान करते हैं, अन्यथा विकास के अभाव में वह सम्पूर्ण जीवन एक पशु ही बना रहेगा। इस विकास की आधारशिला है शिक्षा। वस्तुतः शिक्षा व्यक्ति के लिए प्रत्येक आयु स्तर पर उपयोगी है क्योंकि शिक्षा तो विकास की अनवरत प्रक्रिया है और ज्ञान के रूप में यह मानव के लिए अपरिहार्य है। बालक के विकास की प्रक्रिया जन्म से पूर्व माता के गर्भ से ही प्रारम्भ हो जाती है। जन्म के बाद शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था तथा प्रौढ़ावस्था तक क्रमशः चलती रहती है। विकास की इन अवस्थाओं में व्यक्ति के सभी प्रकार के विकास यथा शारीरिक, सामाजिक, बौद्धिक तथा सांवेगिक साथ–साथ होते रहते हैं तथा एक दूसरे

को प्रभावित करते हैं। मानव जीवन की विकास की अवस्थाओं में किशोरावस्था का महत्त्वपूर्ण स्थान है। यह जीवन का सबसे कठिन काल है। सामान्य रूप से यह अवस्था 12 वर्ष की आयु से 18 वर्ष की आयु तक मानी जाती हैं आज माध्यमिक विद्यालयों में अधिकांश विद्यार्थी किशोरावस्था में होते है इसे विद्यालयी शिक्षा की अवस्था भी कहा जाता है। विद्यालयी शिक्षा से जुड़े होने के कारक बालक के किशोरावस्था में होने वाले विकासों में मानसिक और बौद्धिक विकास का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण स्थान है।

मानसिक विकास से तात्पर्य मानसिक क्षमताओं के विकास से होता है। इन मानसिक क्षमता में चिन्तन, तर्क, प्रत्यक्षीकरण, समस्या–समाधान, योग्यताएँ शामिल होती हैं। किशोरावस्था के आने तक मानसिक विकास अपने चरम पर होता है इसलिए किशोरावस्था बालक विकास की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अवस्था मानी जाती है। हमारी वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था में किशोरावस्था से जुड़ी शिक्षा माध्यमिक शिक्षा है। माध्यमिक शिक्षा, जैसा कि स्वतः स्पष्ट है कि शिक्षा संरचना की मध्यस्थ कड़ी है जिससे एक ओर प्राथमिक शिक्षा व दूसरी ओर उच्च शिक्षा जुड़ी रहती है। माध्यमिक शिक्षा वर्तमान शिक्षा प्रणाली की सबसे महत्त्वपूर्ण शिक्षा है। माध्यमिक शिक्षा, शिक्षा का वह समय है जो मुख्य रूप से लगभग 12 से 18 वर्ष की आयु वर्ग वाले के लिए होती है। इस अवस्था में शिक्षा का बल, सीखने के आधारभूत साधनों अभिव्यक्ति और अवबोध से हटना शुरू हो जाता है। बल का केन्द्र अब इस बात पर खोज करने के लिए हो जाता है कि इन साधनों का उपयोग विचार और जीवन के क्षेत्रों में किस प्रकार किया जा सकता है। किशोर अब सूचनाओं, सम्प्रत्ययों, बौद्धिक, कौशलों, अभिवृत्तियों, सामाजिक–शारीरिक–बौद्धिक, आदतों, अवबोधों श्लाघा आदि की खोज करने लगता है।

वर्तमान समय में माध्यमिक शिक्षा का महत्व और अधिक बढ़ गया है, क्योंकि जब से शिक्षा के व्यवसायीकरण का प्रश्न लोगों के सामने आया और बेरोजगारी को दूर भगाने के लिए लोग सचेष्ट हुए, तभी से लोगों ने माध्यमिक शिक्षा के महत्व को और अधिक जाना। इसीलिए आज माध्यमिक स्तर पर पाठ्यक्रम में विभिन्नीकरण के सिद्धान्त को प्रमुखता दी जा रही है; जिससे अपनी रुचि के अनुसार विषयों का अध्ययन कर छात्र–छात्राएँ अपने भविष्य के रोजगार हेतु सचेष्ट हो जायें जिससे कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को जैसे कि चिन्तन, समस्या समाधान, तर्क, मानसिक योग्यता इत्यादि की क्षमताओं को विकसित एवं सुदृढ़ किया जा सके।

मानसिक योग्यता का विद्यार्थियों के अभिभावक सम्बन्ध का महत्त्वपूर्ण सम्बन्ध होता है। जहाँ बालक अपने माता–पिता से अच्छे सम्बन्ध होते हैं वहीं माता–पिता अपने बच्चों के मानसिक योग्यता पर विशेष ध्यान देते हैं एवं उनकी योग्यताओं के आधार पर उन्हें समय–समय पर दिशा–निर्देश के साथ–साथ उनको आगे बढ़ने में अपनी सामर्थ्य के अनुसार उनकी मद्द भी करते हैं। पूर्व शोध अध्ययन में **आनन्द[i] (1973)** ने अध्ययन किया और पाया कि जिन छात्रों की सामाजिक आर्थिक स्थित व पर्यावरण उच्च स्तर की है उन छात्रों की मानसिक योग्यता, शैक्षिक उपलब्धि अन्य से उच्च है। **शर्मा[ii] (1982)** ने अध्ययन में पाया कि जिन छात्रों का मानसिक योग्यता

निम्न स्तर के सामाजिक आर्थिक स्तर के छात्रों की अपेक्षा अधिक था। **सिन्हा (1983)**[iii] ने अध्ययन में पाया कि जिन छात्रों के माता–पिता की आर्थिक व सामाजिक स्थिति अच्छी थी उन छात्रों से जिनके माता–पिता की आर्थिक व सामाजिक स्थिति अच्छी नहीं की मानसिक योग्यता व शैक्षिक उपलब्धि उच्च थी। **मेहरोत्रा (1986)**[iv] ने अध्ययन में पाया कि पाया गया कि जिनका सामाजिक आर्थिक स्तर के साथ–साथ व्यक्तित्व व चिंतन उच्च स्तर का है उनकी उच्च मानसिक योग्यता अन्य से अधिक थी। **आनन्द (1989)**[v] ने अध्ययन में पाया कि जिन बच्चों के माता–पिता शिक्षित होने के साथ–साथ व्यावसायिक स्तर भी अच्छा है उन बच्चों की मानसिकता योग्यता उच्च है। जिन बच्चों के माता–पिता अशिक्षित होने के साथ–साथ व्यावसायिक स्तर भी अच्छा नहीं हैं उनकी मानसिक योग्यता निम्न है। **शूलियांग एण्ड सुगवारा (1996)** [vi] ने अनुसंधान में पाया कि बच्चों के मानसिक योग्यता विकास के लिए सामाजिक–आर्थिक स्तर ठीक होने के साथ ही अभिभावकों का बच्चों के साथ–मधुर व्यवहार भी उत्तरदायी है।

वहीं अभिभावक सम्बन्ध अच्छा न होना विद्यार्थियों के मानसिक योग्यता पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। पूर्व शोध अध्ययन में **जॉन टकर एण्ड हावर्ड फ्रायडमैन (1997)**[vii] ने शोधकार्य में पाया कि जिन बच्चों के माता–पिता ने तलाक ले लिया था उनके बच्चों की मानसिक योग्यता गैरत तलाक लिए माता–पिता के बच्चों की अपेक्षा कम थी।

बालकों के मानसिक योग्यता पर जन्मक्रम का भी प्रभाव पड़ता है। जहाँ पहले बच्चें को अभिभावक हद से अधिक प्यार करते हैं एवं उनके प्रति उनका लगाव अधिक होता है वहीं दूसरे, तीसरे या अन्य बच्चों के प्रति उनका लागव कम होता है जाता है और वे प्रथम बच्चे की तरह उस पर विशेष ध्यान नहीं देते हैं जिससे उनकी मानसिक योग्यता अच्छा होने पर भी उनके अभिभावक सम्बन्ध अच्छे न होने पर मानसिक योग्यता को प्रभावित करता है। जैसा कि पूर्व शोध अध्ययन में **देसाई**[viii] **(1974)** ने अध्ययन में पाया कि तीसरे क्रम में जन्म लेने वाले बच्चें की मानसिक योग्यता पहले, दूसरे क्रम में जन्म लेने वाले बच्चों की मानसिक योग्यता से उच्च है। चौथे, पाँचवे, छठवें क्रम में जन्म लेने वाले बच्चों की मानसिक योग्यता, पहले व दूसरे क्रम में जन्म लेने वाले बच्चों से श्रेष्ठ नहीं है।

माध्यमिक स्तर की शिक्षा के बाद जो बच्चे शिक्षा छोड़ देते हैं वे किसी भी व्यवसायिक कार्यों में अपने को समायोजित करने लगते हैं और अभिभावक उनसे अधिक अपेक्षा करने लगता है और उन्हें किसी अच्छे कार्यों में समायोजित करने की चाहत रखते हैं। वहीं उच्च सामाजिक–आर्थिक स्तर के परिवार में बच्चों को अपने व्यापार में जोड़ देते हैं वहीं निम्न

सामाजिक–आर्थिक स्तर के लोग अपने बच्चों को किसी कल–कारखाने या खेती या किसी छोटे उद्योग धन्धों में जोड़ देते है। जिससे उनके जीवन के लक्ष्य को आगे बढ़ाया जा सकें।

अतः अध्ययनकर्त्ता द्वारा माध्यमिक स्तर के विद्यालय त्याज्य बालकों के अभिभावक सम्बन्ध का उनके मानसिक योग्यता पर प्रभाव देखने का प्रयास किया गया है।

समस्या कथन–

माध्यमिक स्तर के विद्यालय त्याज्य बालकों के अभिभावक सम्बन्ध का उनके मानसिक योग्यता पर प्रभाव।

अध्ययन का उद्देश्य–

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित उद्देश्यों का अध्ययन किया गया है–

1. माध्यमिक स्तर के विद्यालय त्याज्य बालकों के मानसिक योग्यता का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यालय त्याज्य बालकों के अभिभावक सम्बन्ध का उनके मानसिक योग्यता पर प्रभाव का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया है–

1. माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न अभिभावक सम्बन्ध वाले विद्यालय त्याज्य बालकों की मानसिक योग्यता में अन्तर नहीं है।

शोध–प्रविधि–

प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत सहसम्बन्धात्मक विधि का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में इलाहाबाद जनपद के माध्यमिक विद्यालयों की शिक्षा ग्रहण कर शिक्षा त्याग करने वाले बालकों को जनसंख्या माना गया है। न्यादर्श के रूप में 150 बालकों का चयन उद्देश्यपरक विधि से किया गया है। डॉ0 नलिनी राव द्वारा सृजित ''माता–पिता बालक सम्बन्ध'' परीक्षण तथा मानसिक योग्यता को मापने के लिए बुद्धि को मापने के लिए एम. सी. जोशी द्वारा निर्मित मानसिक योग्यता परीक्षण का प्रयोग किया गया है। आँकड़ों के विश्लेषण के प्रसरण (एनोवा) सांख्यिकी विधि तथा टी–परीक्षण का प्रयोग किया है।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

1. माध्यमिक स्तर के विद्यालय त्याज्य बालकों के अभिभावक सम्बन्ध का उनके मानसिक योग्यता पर प्रभाव का अध्ययन करना।

H_{01} माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न अभिभावक सम्बन्ध वाले विद्यालय त्याज्य बालकों की मानसिक योग्यता में अन्तर नहीं है।

तालिका सं0 1

माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न अभिभावक सम्बन्ध वाले विद्यालय त्याज्य बालकों की मानसिक योग्यता में अन्तर को दर्शाते हुए एफ–अनुपात

स्रोत	df	SS	MS	F	सारणी मान
समूहों के मध्य	2	282.16	141.08	7.97	F.05(2,147)=3.06
समूहों के अन्दर	147	2620.83	17.71		
कुल	**149**	**2902.99333**	**158.79**		

*.05 स्तर पर सार्थक

सारणी संख्या 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि एफ–अनुपात का मान 7.97 हैं, जो .05 सार्थकता स्तर पर $df = 2, 147$ पर सारणी मान 3.06 से अधिक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है। इस सार्थक एफ अनुपात के आधार पर कहा जा सकता है कि माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न अभिभावक सम्बन्ध वाले विद्यालय त्याज्य बालकों की मानसिक योग्यता में भिन्नता है।

सारणी सं0 – 1.1

माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न अभिभावक सम्बन्ध वाले विद्यालय त्याज्य बालकों की मानसिक योग्यता के मध्यमानों के अन्तर का टी–अनुपात

क्र. सं.	चर	न्यादर्श (N)	मध्यमान (M)	σ_D	D	t-मान	सार्थकता स्तर
1.	उच्च	42	74.69	0.82	3.28	3.99*	**सार्थक**
	मध्यम	70	71.41				
2.	उच्च	42	74.69	0.94	1.93	2.05*	**सार्थक**
	निम्न	38	72.76				
3.	मध्यम	70	71.41	0.85	1.35	1.59	**सार्थक**
	निम्न	38	72.76				

सारणी संख्या 1.1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के उच्च, मध्यम एवं निम्न अभिभावक सम्बन्ध वाले विद्यालय त्याज्य बालकों की मानसिक योग्यता के मध्यमानों के मध्य मध्य टी–मान क्रमशः 3.99, 2.05 एवं 1.59 है। सार्थक युग्म तुलना से यह स्पष्ट हैं कि उच्च अभिभावक सम्बन्ध वाले विद्यालय त्याज्य बालकों की मानसिक योग्यता मध्यम एवं निम्न अभिभावक सम्बन्ध वाले बालकों की अपेक्षा उच्च है। सारणी से स्पष्ट हैं कि उच्च, मध्यम एवं निम्न अभिभावक सम्बन्ध वाले बालकों की मानसिक योग्यता एक–दूसरे से भिन्न है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुये–

1. माध्यमिक स्तर के उच्च एवं मध्यम अभिभावक सम्बन्ध वाले विद्यालय त्याज्य बालकों की मानसिक योग्यता में अन्तर है।
2. माध्यमिक स्तर के उच्च एवं निम्न अभिभावक सम्बन्ध वाले विद्यालय त्याज्य बालकों की मानसिक योग्यता में अन्तर है।
3. माध्यमिक स्तर के मध्यम एवं निम्न अभिभावक सम्बन्ध वाले विद्यालय त्याज्य बालकों की मानसिक योग्यता में अन्तर नहीं है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि बालकों के अभिभावक सम्बन्ध का विद्यालय त्याज्य बालकों के मानसिक योग्यता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

सन्दर्भ सूची

i सी0एल0 आनन्द (1973) ए स्टडी ऑफ द इफेक्ट ऑफ सोशियो इकोनामिक एनवायरमेन्ट एण्ड मीडियम ऑफ इन्सट्रक्शन ऑन द मेन्टल एबिल्टीज एण्ड द एकेडमिक एचीवमेन्ट ऑफ चिल्ड्रेन इन मैसूर स्टेट पी0एच0डी0 शिक्षा शास्त्र मैसूर विश्वविद्यालय।

ii आर0 एन0 पाडे (1970) डिफरेन्स इन मेन्टल एबिल्टी एमांग सोशल क्लासेज'' पी0एच0डी0 लखनऊ विश्वविद्यालय

iii एन0एस0पी0, सिन्हा (1983) 'ए स्टडी ऑफ मेंटल एबिलिटी एण्ड सम पर्सनालिटी फैक्टर्स इन रिलेशन टू एकेडमिक अचीवमेन्ट ऑफ स्कूल स्टूडेन्ट', पी–एच.डी. (साइकोलॉजी), मगध यूनिवर्सिटी।

iv 'एस0 मेहरोत्रा (1986) 'ए स्टडी ऑफ द रिलेशन बिटवीन मेन्टल एबिलिटी सोशियो–इकोनामिक स्टेट्स एन्जाइटी, पर्सनालिटी एडजेस्टमेन्ट एण्ड एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ हाईस्कूल स्टूडेन्ट्स', पी–एच.डी. शिक्षाशास्त्र, लखनऊ यूनिवर्सिटी।

v 'एस0पी0, आनन्द (1989) 'फाउण्ड दैट द मेन्टल एबिलिटी ऑफ चिल्ड्रेन वाज़ डिपेन्डेंट अप ऑन द एजूकेशन एण्ड आक्यूपेशनल स्टेट्स ऑफ पैरेन्ट्स', डी0फिल0 शिक्षाशास्त्र, उत्कल यूनिवर्सिटी।

vi शूलियांग एण्ड एलन–आई सुगवारा (1996) 'फेमिली साइज बर्थ आर्डर, सोशियो इकोनामिक स्टेट्स, इथनीसिटी, पेरेन्ट–चाइल्ड रिलेशनशिप एण्ड प्री–स्कूल चिल्ड्रेन्स मेन्टल डेवलपमेन्ट', जर्नल आर्टिकल्स रिपोर्ट रिसर्च मिशिगन, यू0एस0ए0 यूनिवर्सिटी।

vii एस0 जॉन टकर एण्ड एस0 हैवर्ड फ्रायडमैन (1997), ''पैरेन्टल डिवोर्स इफेक्ट्स ऑन इन्डिविजुअल बिहैवियर एण्ड लांगेविटी', जर्नल आर्टिकल्स रिपोर्ट, रिसर्च यू0एस0ए0

viii के0 शर्मा (1981) सम सोशियो इकोनामिक करेक्ट्रीज एण्ड मेन्टल एबिल्टीज ऑु हाई स्टूडेन्ट पी0एच0डी0 उपधि हेतु मगध विश्वविद्यालय